E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सिंधिया राजवंश के महलों एवं मंदिरों में मिश्रित स्थापत्य शैली का ऐतिहासिक विश्लेषण

रिचा राजपूत
पीएच. डी. शोधार्थी (इतिहास)
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Received date
05/05/2026
Publishing Date
10/05/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.21674681

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर की स्थापत्य परंपराको एक नवीन एवं विशिष्ट पहचान प्रदान की। 18वीं शताब्दी में मराठा शक्ति के उदय के पश्चात सिंधिया शासकों ने ग्वालियर को केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं स्थापत्य दृष्टि से भी समृद्ध बनाया। उनके शासन काल में निर्मित महलों, मंदिरों, छतरियों तथा प्रशासनिक भवनों में विविध स्थापत्य शैलियों का समन्वित स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सिंधिया शासकों ने भारतीय पारंपरिक स्थापत्य कला को मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय स्थापत्य प्रभावों के साथ जोड़कर एक ऐसी विशिष्ट वास्तुशैली विकसित की, जो ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार बन गई।

सिंधिया स्थापत्य की प्रमुख विशेषता इसकी बहुआयामी शैली है। भवनों में मेहराब, गुंबद, झरोखे, विशाल प्रांगण, नक्काशीदार स्तंभ, अलंकृत द्वार तथा भव्य दरबार हॉल का निर्माण विभिन्न स्थापत्य परंपराओं के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। जयविलास पैलेस जैसे महलों में यूरोपीय शैली की भव्यता दिखाई देती है, जबकि मंदिरों एवं छतरियों में हिन्दू एवं राजपूत स्थापत्य परंपरा का प्रभाव प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है।

यह स्थापत्य केवल कलात्मक सौंदर्य एवं राजसी वैभव का प्रतीक नहीं था, बल्कि तत्कालीन राजनीतिक शक्ति, धार्मिक आस्था एवं सांस्कृतिक समन्वय का भी प्रतिनिधित्व करता था। सिंधिया शासकों ने स्थापत्य को सांस्कृतिक संरक्षण एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के माध्यम के रूप में विकसित किया। उनके द्वारा निर्मित भवनों में स्थानीय शिल्पकारों की कला, पारंपरिक भारतीय तकनीकों तथा विदेशी वास्तुशिल्पीय प्रभावों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में सिंधिया राजवंश के प्रमुख महलों एवं मंदिरों की स्थापत्य संरचना, कलात्मक विशेषताओं, सांस्कृतिक महत्व तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि सिंधिया स्थापत्य भारतीय कला इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसका संरक्षण एवं अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द–सिंधिया स्थापत्य, ग्वालियर, मिश्रित वास्तुकला, मंदिर स्थापत्य, महल स्थापत्य, सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना

भारतीय स्थापत्य कला का विकास विभिन्न राजवंशों, सांस्कृतिक परंपराओं तथा विदेशी संपर्कों के माध्यम से क्रमिक रूप से हुआ है। प्रत्येक शासनकाल ने अपनी राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार स्थापत्य कला को नई दिशा प्रदान की। मध्य भारत का ग्वालियर नगर प्राचीन काल से ही कला, संस्कृति एवं स्थापत्य का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। विशेष रूप से सिंधिया राजवंश का काल ग्वालियर के स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सिंधिया शासकों ने अपनी राजनीतिक शक्ति, सांस्कृतिक दृष्टि कोण तथा कलात्मक अभिरुचि के अनुरूप अनेक महलों, मंदिरों, छतरियों एवं प्रशासनिक भवनों का निर्माण कराया। इन भवनों में भारतीय एवं विदेशी स्थापत्य शैलियों का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।[1]

सिंधिया स्थापत्य की प्रमुख विशेषता इसकी मिश्रित वास्तुशैली है, जिसमें हिन्दू, मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय स्थापत्य तत्वों का संतुलित समावेश दृष्टि गोचर होता है। महलों में विशाल दरबार हॉल, मेहराब, गुंबद, झूमर एवं यूरोपीय शैली के स्तंभ दिखाई देते हैं, जबकि मंदिरों में नागर शैली के शिखर, मंडप, नक्काशीदार स्तंभ तथा धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है। जयविलास पैलेस, मोतीमहल एवं विभिन्न सिंधिया छतरियाँ इस स्थापत्य परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।[2]

सिंधिया स्थापत्य केवल राजसी भव्यता एवं शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं था, बल्कि यह धार्मिक आस्था, सामाजिक चेतना एवं सांस्कृतिक समन्वय का भी प्रतीक था। इन भवनों ने कला, संगीत, साहित्य एवं शिल्प परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया। ग्वालियर घराने के संगीत विकास में भी सिंधिया दरबारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस स्थापत्य शैली ने ग्वालियर को एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रदान की तथा भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में उसे महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। वर्तमान समय में ये स्थापत्य धरोहरें पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन एवं ऐतिहासिक अनुसंधान के प्रमुख केंद्र हैं।[3]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शोध के उद्देश्य

1. सिंधिया राजवंश के महलों एवं मंदिरों की स्थापत्य संरचना का अध्ययन करना।
2. मिश्रित स्थापत्य शैली के विकास के कारणों का विश्लेषण करना।
3. सिंधिया स्थापत्य में भारतीय एवं विदेशी प्रभावों का अध्ययन करना।
4. स्थापत्य कला के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व को स्पष्ट करना।
5. ग्वालियर की स्थापत्य विरासत में सिंधिया राजवंश के योगदान का मूल्यांकन करना।

सिंधिया स्थापत्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

18वीं शताब्दी में मराठा शक्ति के विस्तार के साथ सिंधिया राजवंश का उदय भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। महादजी सिंधिया ने अपनी राजनीतिक कुशलता एवं सैन्य क्षमता के बल पर ग्वालियर राज्य को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। उन्होंने ग्वालियर को केवल एक सामरिक केंद्र के रूप में ही विकसित नहीं किया, बल्कि उसे राजनीतिक प्रतिष्ठा एवं सांस्कृतिक गौरव का भी केंद्र बनाया। महादजी सिंधिया के पश्चात आने वाले शासकों–विशेषतः जयाजीराव सिंधिया, माधवराव सिंधिया एवं जीवाजीराव सिंधिया ने स्थापत्य कला, संस्कृति एवं शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[4]

ब्रिटिश संपर्क एवं उत्तर भारतीय स्थापत्य परंपराओं के प्रभाव के कारण सिंधिया स्थापत्य में नवीन प्रयोग दिखाई देने लगे। इस काल में निर्मित भवनों में भारतीय, मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय स्थापत्य तत्वों का समन्वय स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होता है। महलों में विशाल स्तंभ, भव्य दरबार हॉल, मेहराब, झूमर एवं संगमरमर की सजावट यूरोपीय एवं मुगल प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि मंदिरों एवं छतरियों में हिन्दू एवं राजपूत स्थापत्य परंपरा का प्रभाव प्रमुख रूप से दिखाई देता है।[5]

सिंधिया शासकों ने स्थापत्य को केवल प्रशासनिक या शासकीय आवश्यकताओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे अपनी सांस्कृतिक पहचान, कलात्मक अभिरुचि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का माध्यम बनाया। उन्होंने ऐसे भवनों का निर्माण कराया जो राजसी वैभव के साथ–साथ सांस्कृतिक समन्वय एवं धार्मिक आस्था का भी प्रतीक थे। यही कारण है कि सिंधिया कालीन स्थापत्य में विविध कला शैलियों का संतुलित एवं समन्वित स्वरूप दिखाई देता है। यह स्थापत्य ग्वालियर की सांस्कृतिक विरासत एवं भारतीय कला इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।[6]

मिश्रित स्थापत्य शैली के प्रमुख तत्व

मिश्रित स्थापत्य शैली में हिन्दू, मुगल, राजपूत एवं यूरोपीय तत्वों का समन्वय दिखाई देता है, जिससे भव्यता, कलात्मकता एवं सांस्कृतिक विविधता विकसित हुई। मिश्रित स्थापत्य शैली के प्रमुख तत्व निम्नहैं–

1. **हिन्दू स्थापत्य तत्व**–सिंधिया कालीन स्थापत्य में हिन्दू स्थापत्य परंपरा का प्रभाव विशेष रूप से मंदिरों एवं धार्मिक स्मारकों में दिखाई देता है। इन मंदिरों में नागर शैली के ऊँचे शिखर, मंडप, गर्भगृह तथा नक्काशीदार स्तंभों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया।मंदिरों की दीवारों एवं स्तंभों पर देवी–देवताओं, पुष्प आकृतियों तथा धार्मिक प्रतीकों की उत्कृष्ट मूर्तिकला उकेरी गई, जो भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक आस्था को अभिव्यक्त करती है। मंदिर निर्माण में पारंपरिक भारतीय शिल्प तकनीकों का उपयोग किया गया, जिससे स्थापत्य में आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक गरिमा का समावेश हुआ।[7]

2. **मुगल स्थापत्य तत्व**–सिंधिया स्थापत्य परमुगल शैली का प्रभाव महलों एवं प्रशासनिक भवनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भवनों में मेहराब, गुंबद, फव्वारे, विशाल द्वार तथा संगमरमर की सजावट का प्रयोग मुगल स्थापत्य की विशेषताओं को दर्शाता है। उद्यान योजना एवं जल संरचनाओं का निर्माण भी मुगल प्रभाव का प्रमुख उदाहरण है। भवनों की सममितीय संरचना, विशाल प्रांगण एवं अलंकृत दीवारें स्थापत्य को भव्यता प्रदान करती हैं। मुगल शैली के इन तत्वों ने सिंधिया स्थापत्य में सौंदर्य, संतुलन एवं राजसी गरिमा को विकसित किया।[8]

3. **राजपूत स्थापत्य तत्व**–राजपूत स्थापत्य शैली का प्रभाव सिंधिया कालीन भवनों में विशेष रूप से झरोखों, छतरियों, जालियों एवं अलंकृत प्रवेश द्वारों में दिखाई देता है। पत्थर पर की गई सूक्ष्म नक्काशी, सजावटी आकृतियाँ तथा ऊँचे प्रवेश द्वार भवनों को कलात्मक गरिमा प्रदान करते हैं। छतरियाँ एवं झरोखे राजपूत स्थापत्य की प्रमुख पहचान माने जाते हैं, जिनका उपयोग सौंदर्य एवं उपयोगिता दोनों दृष्टियों से किया गया। इस शैली ने सिंधिया स्थापत्य में वीरता, राजसी प्रतिष्ठा एवं सांस्कृतिक गौरव की भावना को अभिव्यक्त किया।[9]

4. **यूरोपीय स्थापत्य तत्व**–19वीं शताब्दी में ब्रिटिश संपर्क के कारण सिंधिया स्थापत्य पर यूरोपीय शैली का प्रभाव बढ़ने लगा। भवनों में विशाल स्तंभ, ऊँची छतें, भव्य दरबार हॉल, झूमर तथा संगमरमर की सजावट यूरोपीय स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ थीं। सममितीय भवन योजना, आधुनिक निर्माण तकनीक तथा विशाल खिड़कियों का प्रयोग भी यूरोपीय प्रभाव को

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दर्शाता है। जयविलास पैलेस इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ इटालियन एवं कोरिंथियन शैली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। यूरोपीय प्रभाव ने सिंधिया स्थापत्य को आधुनिकता एवं भव्यता प्रदान की।[10]

प्रमुख महलों का स्थापत्य अध्ययन

जयविलास पैलेस, मोतीमहल एवं कम्पू कोठी सिंधिया स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण हैं, जिनमें भारतीय, मुगल एवं यूरोपीय शैलियों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। प्रमुख महलों का स्थापत्य का अध्ययन निम्न प्रकार से कर सकते हैं–

1. **जयविलास पैलेस**–जयविलास पैलेस सिंधिया स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे भव्य उदाहरण माना जाता है। इसका निर्माण महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने 19वीं शताब्दी में कराया था। इस महल की वास्तुकला में इटालियन, फ्रांसीसी तथा यूरोपीय शैली का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। विशाल दरबार हॉल, स्वर्ण अलंकरण, आकर्षक काँच के झूमर, संगमरमर की सजावट तथा ऊँची छतें इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। महल की सममितीय योजना एवं कलात्मक संरचना सिंधिया शासकों की आधुनिक दृष्टि एवं राजसी वैभव को अभिव्यक्त करती है। वर्तमान समय में यह महल ग्वालियर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है।[11]

2. **मोतीमहल**–मोतीमहल सिंधिया प्रशासन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र था। इसका निर्माण राजकीय कार्यों एवं दरबारी सभाओं के आयोजन हेतु कराया गया था। इसकी स्थापत्य शैली में भारतीय एवं मुगल स्थापत्य तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। भवन के विशाल कक्ष, मेहराब, अलंकृत दीवारें तथा कलात्मक सजावट इसकी स्थापत्य उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं। मोतीमहल में उपयोगिता एवं सौंदर्य का संतुलित समावेश दिखाई देता है। यह भवन सिंधिया शासकों की प्रशासनिक दक्षता, सांस्कृतिक अभिरुचि एवं कला संरक्षण की भावना का महत्वपूर्ण उदाहरण है।[12]

3. **कम्पू कोठी**–कम्पू कोठी सिंधिया शासनकाल का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक भवन था, जिसका उपयोग शासकीय कार्यों एवं प्रशासनिक गतिविधियों के लिए किया जाता था। इसकी संरचना में मराठा एवं यूरोपीय स्थापत्य शैली का मिश्रित प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भवन की संतुलित योजना, विशाल प्रांगण, ऊँची छतें तथा मजबूत निर्माण शैली इसे स्थापत्य दृष्टि से विशिष्ट बनाती हैं। कम्पू कोठी में उपयोगिता एवं कलात्मकता का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। यह भवन सिंधिया शासन की प्रशासनिक व्यवस्था तथा आधुनिक स्थापत्य दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है।[13]

मंदिर स्थापत्य एवं धार्मिक दृष्टिकोण

सिंधिया शासकों ने धार्मिक स्थापत्य के विकास एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने शासनकाल में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया तथा प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार भी करवाया। सिंधिया कालीन मंदिरों में पारंपरिक हिन्दू स्थापत्य शैली के साथ स्थानीय कला एवं शिल्प परंपराओं का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इन मंदिरों में नागर शैली के शिखर, मंडप, गर्भगृह, नक्काशीदार स्तंभ तथा देवी–देवताओं की कलात्मक मूर्तियों का निर्माण विशेष रूप से किया गया। पत्थर पर की गई सूक्ष्म नक्काशी एवं धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग मंदिरों को आध्यात्मिक एवं कलात्मक गरिमा प्रदान करता है।[14]

सिंधिया शासकों के लिए मंदिर केवल पूजा–अर्चना के स्थान नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के महत्वपूर्ण केंद्र भी थे। मंदिरों के माध्यम से समाज में धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक चेतना एवं सामाजिक एकता को सुदृढ़ किया जाता था। उस समय मंदिरों में धार्मिक उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीत सभाएँ एवं सामाजिक आयोजन आयोजित किए जाते थे, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य एवं सांस्कृतिक संवाद स्थापित होता था।

मंदिर निर्माण के माध्यम से सिंधिया शासकों ने भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने स्थानीय शिल्पकारों एवं कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया, जिससे स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला का विकास हुआ। इस प्रकार सिंधिया कालीन धार्मिक स्थापत्य केवल धार्मिक महत्व का प्रतीक नहीं था, बल्कि वह ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक संरचना का भी महत्वपूर्ण आधार था।[15]

निष्कर्ष

सिंधिया राजवंश के महलों एवं मंदिरों में विकसित मिश्रित स्थापत्य शैली भारतीय कला एवं वास्तुकला के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय मानी जाती है। ग्वालियर में निर्मित सिंधिया कालीन भवनों में हिन्दू, मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय स्थापत्य शैलियों का संतुलित एवं कलात्मक समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह स्थापत्य केवल भवन निर्माण की कला तक सीमित नहीं था, बल्कि उस समय की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था तथा राजनीतिक वैभव का भी प्रतिनिधित्व करता था। सिंधिया शासकों ने स्थापत्य कला को अपनी सांस्कृतिक पहचान एवं राजकीय प्रतिष्ठा के माध्यम के रूप में विकसित किया।

जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पू कोठी, सिंधिया छतरियाँ तथा विभिन्न मंदिर आज भी ग्वालियर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। इन भवनों की संरचना, अलंकरण एवं कलात्मक शैली तत्कालीन स्थापत्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कौशल एवं शिल्प परंपराओं की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है। महलों में यूरोपीय एवं मुगल शैली की भव्यता दिखाई देती है, जबकि मंदिरों एवं छतरियों में हिन्दू एवं राजपूत स्थापत्य तत्व प्रमुख रूप से दृष्टि गोचर होते हैं।

सिंधिया स्थापत्य ने न केवल ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया, बल्कि कला, संगीत, साहित्य एवं धार्मिक गतिविधियों को भी संरक्षण प्रदान किया। वर्तमान समय में ये स्थापत्य धरोहरें पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन एवं ऐतिहासिक अनुसंधान के महत्वपूर्ण केंद्र बन चुकी हैं। इसलिए इन ऐतिहासिक भवनों का संरक्षण, संवर्धन एवं गहन अध्ययन भारतीय कला इतिहास, स्थापत्य परंपरा तथा सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] द्विवेदी, हरिहर निवास (1980): ग्वालियर दर्शन, साधना प्रेस, ग्वालियर, पृ. 274–277।

[2] जैसल, डॉ. एच. बी. माहेश्वरी (2017): ग्वालियर, इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन, पर्यटन टुडे, ग्वालियर पृष्ठ– 40–51।

[3] तिवारी, डॉ. ऋचा (2023): सिंधिया स्थापत्य, बी.एफ.सी. पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ, पृ. 68–117

[4] चतुर्वेदी, डॉ. ममता (2021): ग्वालियर की सांस्कृतिक धरोहर, साहित्य संगम प्रकाशन, भोपाल, पृ. 85–102।

[5] शर्मा, पी. (2010): सिंधिया घराने का सामाजिक और राजनीतिक योगदान, भोपाल, लोक भारती प्रकाशन, पृ. सं. 101–118।

[6] कुरैशी, नईम (2011): ग्वालियर के आस–पास, चम्बल पोस्ट प्रकाशन, ग्वालियर (म.प्र.), पृ. 39–47।

[7] मजुपुरिया, संजय (2022): ग्वालियर का सांस्कृतिक इतिहास, फ्रेंड्स डिजिटल कलर प्रिंट शॉप, नई दिल्ली, पृष्ठ 276–294।

[8] तिवारी, डॉ. ऋचा (2023): सिंधिया स्थापत्य, बी.एफ.सी. पब्लिकेशन्स, लखनऊ, पृष्ठ – 80–117।

[9] सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के अनुसार।

[10] ग्वालियर गजेटियर (1968) पृष्ठ 268–332।

[11] Archaeological Survey of India (ASI) (1995): Reports Related to Gwalior State Architecture, Government of India Publication, New Delhi, pp. 67-89.

[12] ग्वालियर राज्य गजेटियर (1912): सेंट्रल इंडिया गजेटियर, वॉल्यूम–प्ट, कलकत्ता, भारत सरकार प्रकाशन, पृ. सं. 155–168।

[13] श्रीवास्तव, प्रो. मीना (2019): तोमर, सिंधिया एवं राष्ट्रवादी इतिहास, श्री राम प्रकाशन, समर्पण प्रिंटर्स, ग्वालियर, पृष्ठ – 84–87, 93–107।

[14] Havell, E.B. (1913): Indian Architecture and Its History, John Murray Publication, London, pp. 210-228.

[15] ग्वालियर गजेटियर (1908): सामाजिक और प्रशासनिक गतिविधियाँ, ग्वालियर राज्य प्रकाशन, पृ. सं. 115–134।